Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, FEB-MAR, 2022, VOL-10/50

भारत की विदेशनीति का चीन की स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स की नीति पर प्रभाव

संध्या सिंह[1], Ph. D. & अतुल कुमार[2]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग, डी0ए0वी0 कॉलेज कानपुर

[2]शोध छात्र, रक्षा अध्ययन विभाग, डी0ए0वी0 कॉलेज, कानपुर

Paper Received On: 25 MAR 2022

Peer Reviewed On: 31 MAR 2022

Published On: 1 APR 2022

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

प्रस्तावना

द स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में संभावित चीनी सरकार के इरादों पर एक भू–राजनीतिक सिद्धांत है। यह चीनी सैन्य और वाणिज्यिक सुविधाओं के नेटवर्क और संचार की समुद्री लाइनों के साथ संबंधों को संदर्भित करता है, जो चीनी मुख्य भूमि से अफ्रीका के हॉर्न में पोर्ट सूडान तक फैला हुआ है। समुद्री लाइनों में कई प्रमुख समुद्री माध्यम से चलाने के चोक अंक जैसे डंदकमइ के जलडमरूमध्य, मलक्का जलडमरूमध्य , होर्मुज के जलडमरूमध्य , और लंबोक स्ट्रेट साथ ही पाकिस्तान, श्रीलंका , बांग्लादेश , मालदीव और सोमालिया में अन्य रणनीतिक समुद्री केंद्र ।

भारत में कई टिप्पणीकारों का मानना है कि चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव शी जिनपिंग के तहत चीन के बेल्ट एंड रोड पहल के अन्य हिस्सों के साथ यह योजना भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है । इस तरह की प्रणाली भारत को घेर लेगी, और इसकी शक्ति प्रक्षेपण, व्यापार और संभावित क्षेत्रीय अखंडता को खतरा पैदा करेगी । इसके अलावा, भारत के पाकिस्तान के पारंपरिक दुश्मन और उसके ग्वादर बंदरगाह के लिए चीन के समर्थन को एक खतरे के रूप में देखा जाता है, इस आशंका से और भी बढ़ जाता है कि चीन ग्वादर में एक विदेशी नौसैनिक सैन्य अड्डा विकसित कर सकता है, जो चीन को अभियान युद्ध का संचालन करने की अनुमति दे सकता है । पूर्व से, क्युाकप्यू के गहरे पानी के बंदरगाह को भी इसी तरह की चिंता के साथ देखा जाता है। चीनी योजना का पहला व्यापक अकादमिक विश्लेषण और नई दिल्ली के लिए इसके सुरक्षा निहितार्थ फरवरी 2008 में एक सक्रिय भारतीय नौसेना अधिकारी द्वारा किए गए थे। दिसंबर 2008 में हिंद महासागर में चीन की समुद्री डकैती रोधी नौसैनिक तैनाती और अगस्त 2017 में जिबूती में अपनी पहली विदेशी सेना का अधिग्रहण, हिंद महासागर में चीन की 'स्थायी सैन्य उपस्थिति' की भविष्यवाणी करने वाले उनके विश्लेषण को भारतीय नीति निर्माता प्रेजेंटर के रूप में द्वारा देखा जाता हैं। तदनुसार, भारत तब से कथित खतरे का मुकाबला करने के लिए विभिन्न प्रकार के कदम उठा रहा है।

भू–राजनीतिक अवधारणा के रूप में शब्द का प्रयोग पहली बार 2005 में एक आंतरिक अमेरिकी रक्षा विभाग की रिपोर्ट, 'एशिया में ऊर्जा भविष्य' में किया गया था। इस शब्द का व्यापक रूप से भारत के भू–राजनीतिक और विदेश नीति आख्यानों में भारत की चिंताओं को उजागर करने के लिए उपयोग किया जाता है। दक्षिणी एशिया में बड़े पैमाने पर चीनी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव परियोजनाएं। ईयूआईएसएस के अनुसार, चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (संयुक्त राज्य अमेरिका,

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारत, ऑस्ट्रेलिया और जापान से मिलकर) का गठन भारत–प्रशांत क्षेत्र में चीन की मुखर विदेश और सुरक्षा नीति का प्रत्यक्ष परिणाम है।

मोतियों की माला का उदय बंदरगाहों और हवाई क्षेत्रों तक पहुंच बढ़ाने, सैन्य बलों का विस्तार और आधुनिकीकरण करने और व्यापारिक भागीदारों के साथ मजबूत राजनयिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए ठोस प्रयासों के माध्यम से चीन के बढ़ते भू–राजनीतिक प्रभाव का संकेत है। चीनी सरकार जोर देकर कहती है कि चीन की बढ़ती नौसैनिक रणनीति पूरी तरह से शांतिपूर्ण है और केवल क्षेत्रीय व्यापार हितों की सुरक्षा के लिए है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव हू जिंताओ और शी जिनपिंग दोनों ने जोर देकर कहा है कि चीन कभी भी विदेशी संबंधों में आधिपत्य की तलाश नहीं करेगा। इकोनॉमिस्ट द्वारा 2013 के एक विश्लेषण में यह भी पाया गया कि चीनी चालें प्रकृति में वाणिज्यिक हैं। हालांकि यह दावा किया गया है कि चीन की कार्रवाई हिंद महासागर में चीन और भारत के बीच एक सुरक्षा दुविधा पैदा कर रही है , जिस पर कुछ विश्लेषकों ने सवाल उठाया है, जो चीन की मौलिक रणनीतिक कमजोरियों की ओर इशारा करते हैं।

स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स की नीति

स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स की नीति, चीन के द्वारा हिंद महासागर क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। इस शब्द का प्रयोग अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन के द्वारा किया गया। हिंद महासागर का क्षेत्र दुनिया के मुख्य व्यापारिक मार्गों में शामिल है और फिलहाल यहां अमेरिका का पहले से ही प्रभाव है। भारत एवं चीन भी इस क्षेत्र पर अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। उभरते चीन ने हिंद महासागर में अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' की नीति को बढ़ावा दिया, जिसका अभिप्राय है, हांगकांग से लेकर सूडान के पत्तन तक समुद्री संचार पर चीन का नियंत्रण बना रहे, जिसमें मलक्का जलसंधि, हारमुज जलसंधि तक चीन अपना प्रभाव बनाए रखना चाहता है। इसके अंतर्गत चीन, पाकिस्तान (ग्वादर पत्तन), बांग्लादेश (चटगांव), मालदीव, हम्बनटोटा द्वीप, कोकोद्वीप और सोमालिया तक अपने–अपने नौसैनिक हितों को बनाए रखना है। 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स का सिद्धांत' के बारे में अमेरिका के रक्षा विभाग द्वारा निर्मित रिपोर्ट, एशिया में ऊर्जा का भविष्य में उल्लेख किया गया। क्रिस्टोफर प्रियर्सन ने इसको व्याख्यायित करते हुए कहा कि 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' चीन के उभरते भू–राजनीतिक प्रभाव का परिणाम है, जिसके द्वारा चीन पत्तन (बंदरगाह) और वायु सेना अड्डों पर अपनी पहुंच बेहतर करना चाहता है तथा विभिन्न राज्यों के साथ बेहतर कूटनयिक संबंध बनाना, चीनी सेना का आधुनिकीकरण करके दक्षिणी चीन सागर, मलक्का की संधि, हिंद महासागर और पर्शिया की खाड़ी तक अपने प्रभाव का विस्तार करना है।

स्टिंग ऑफ पर्ल्स नीति और भारत की नीति भारत और इंडोनेशिया के मध्य वर्ष 2001 में एक सैन्य समझौता हुआ। इसलिए हिंद महासागर सुरक्षा और आर्थिक दोनों कारणों से भारत के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वर्ष–1997 में इंडियन ओशियन रिम एसोसिएशन फॉर रीजनल कोऑपरेशन की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त बिम्सटेक की स्थापना भी वर्ष–1997 में हुई। वर्ष 2000 में गंगा–मेकांग परियोजना को आगे बढ़ाया गया। डियागो गार्शिया में पहले ही अमेरिका का सैनिक अड्डा बना हुआ है। ऐसा माना जा रहा है कि 21 वीं शताब्दी में अमेरिका के अतिरिक्त चीन और भारत हिंद महासागर में प्रतिस्पर्धा बनाए रखने वाले मूल देश होंगे। भारत के द्वारा श्रीलंका, मालदीव के साथ महत्वपूर्ण संबंधों पर बल दिया जा रहा है। वर्ष 2000 के बाद भारत की सुरक्षा नीति में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए। हिन्द महासागर की सुरक्षा के लिए भारत के अंडमान निकोबार द्वीप में एकीकृत सैनिक कमान की स्थापना की गई है। अंडमान निकोबार द्वीप समूह म्यांमार के कोकोद्वीप से लगभग 60 किमी. दूर है तथा इंडोनेशिया से करीब 150 किमी दूर है, जबकि भारत से इसकी दूरी तकरीबन 1200 किमी. है तथा अमेरिका, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया एवं जापान जैसे देशों के साथ मालाबार सैनिक अभ्यास भी आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त भारत के द्वारा आसियन देशों के साथ भी सैनिक अभ्यास आयोजित

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

किया जा रहा है। वर्ष 2008 में भारत के द्वारा इंडियन ओसियन नेवल सिंपोजियम का आयोजन किया गया, जिसमें हिंद महासागर में स्थित सभी देशों के नौ सेनाओं को आपसी सहयोग एवं विचार–विमर्श के लिए आमंत्रित किया गया।
हिंद महासागर में भारत के द्वारा मालाबार, नौसैनिक अभ्यास का आयोजन किया गया। इस सैनिक अभ्यास की आरंभिक शुरूआत वर्ष–1992 में शुरू हुई थी, परंतु इस सैनिक अभ्यास को वर्ष 2002 के बाद प्रभावी स्वरूप प्रदान किया गया तथा इसमें अमेरिका, जापान, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया जैसे देशों को शामिल किया गया। जापान के इस सैनिक अभ्यास में शामिल होने पर चीन के द्वारा आपत्ति दर्ज की गई। चीन के अनुसार, भारत अन्य महाशक्तियों के साथ मिलकर चीन को घेरने की नीति अपना रहा है। भारत के अनुसार, इस सैनिक अभ्यास के द्वारा समुद्री डकैती, आतंकवाद, नशीली दवाओं की तस्करी रोकने का प्रयत्न किया जा रहा है। वर्तमान में हिंद महासागर में शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए आस्ट्रेलिया, सिंगापुर इंडोनेशिया, जापान तथा अमेरिका के साथ समुद्री सुरक्षा के मुद्दे पर सहयोग किया जा रहा। है. जिसके द्वारा समुद्री डकैतियों को नियंत्रित किया जाएगा। समुद्री क्षेत्र में आपदा एवं राह कार्यों का संचालन होगा। खोज अभियान में एक–दूसरे का सहयोग किया जाएगा और सभी देश इस मुद्दे पर सहमत है कि समुद्री संचार मार्ग को खुला रखा जाए।

प्रशांत महासागरीय द्वीपों के देशों का सम्मेलन

भारतीय विदेश नीति में समुद्र एवं समुद्री संचार मार्गों पर नियंत्रण के लिए अनेक उपाय किए जा रहे है तथा प्रधानमंत्री के द्वारा वर्ष–2014 में फिजी की यात्रा के दौरान प्रशांत महासागर देशों के सम्मेलन का विचार किया गया और इनमें 14 द्वीप शामिल हैं। वर्ष–2015 में इन देशों की पहली बैठक जयपुर में आयोजित हुई। इसके द्वारा इन देशों के बीच कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, मछली पालन, सौर ऊर्जा, टेली मेडिसिन, टेली एजुकेशन, अंतरिक्ष सहयोग तथा जलवायु परिवर्तन और ई–नेटवर्किंग की क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा दिया। इन देशों के नागरिकों को भारत में 'वीजा ऑन ऐराइवल' की सुविधा दी जाएगी। तथा सस्ते ऋण प्रदान किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त ग्लोबल वार्मिंग का सामना करने के लिए विशेष तकनीकी सहायता तथा क्षमता निर्माण में सहयोग किया जाएगा तथा ग्लोबल वामिंग का सामना करने के लिए एक विशेष कोष का भी निर्माण होगा।

भारत के द्वारा इन देशों के साथ व्यापारिक एवं आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया जा रहा है और इससे भी बढ़कर इन देशों में चीन के बढ़ते प्रभाव को प्रतिसंतुलित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। चीन के द्वारा इन महासागरीय देशों को बड़ी आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है तथा फिजी को सबसे बड़ी आर्थिक सहायता देने वाला देश चीन है। और कोकोद्वीप को दूसरी सबसे बड़ी मात्रा में सहायता देने वाला देश चीन है पापुआ न्यूगिनी, समोया और टोंगा को भी चीन के द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती है। चीन के द्वारा फिजी को दी गई आर्थिक सहायता आस्ट्रेलिया और जापान से भी ज्यादा है। चीन के द्वारा वर्ष 2015 में इन महासागरीय देशों का सम्मेलन आयोजित किया गया तथा चीन द्वारा 55 बिलियन यूआन की आर्थिक सहायता इन देशों को प्रदान किया गया। इन महासागरीय द्वीपों में भारत भी अपना प्रभाव बेहतर करने का प्रयत्न कर रहा है और प्रशांत महासागर क्षेत्र में वर्तमान में भारत के संबंध आस्ट्रेलिया, जापान एवं अमेरिका जैसे देशों के साथ अत्यधिक मधुर मित्रतापूर्ण हैं यह उल्लेखनीय है कि फिजी में बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोगों का निवास है, जिससे भारत का इस देश में वैचारिक प्रभाव बना हुआ है। हैं।
एशिया प्रशात क्षेत्र में अमेरिका, रूस, जापान, आस्ट्रेलिया का परंपरागत रूप में प्रभाव रहा है और चीन के द्वारा अपने प्रभाव का लगातार विस्तार किया जा रहा है तथा भारत के द्वारा भी इस क्षेत्र में अपने प्रभाव को स्थापित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस क्षेत्र में देशों में फिजी का अत्यधिक महत्व है. इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में अनेक छोटे–छोटे देश है, जिसमें तुआलू, नीरू, किरीबाती बानुताउ, सोलोमन द्वीप, पलाऊ, मार्शलद्वीप माइक्रोनेशिया तथा न्यूगिनी शामिल है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारत की विदेश नीति

वैश्विक महामारी **COVID-19** के दौर में पूरा विश्व स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के साथ ही विश्व व्यवस्था में हो रहे परिवर्तनों से जूझ रहा है। विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ कोरोना वायरस की उत्पत्ति को लेकर एक.दूसरे पर दोषारोपण कर रही हैं तो वहीं चीन इस वैश्विक संकट की घड़ी में भी अपने पड़ोसी देशों की सीमाओं का अतिक्रमण करने का प्रयास कर रहा है। चीन की नीति विश्व राजनीति में अपने प्रभाव और शक्ति को बढ़ाने के उद्देश्य से परिचालित है। जो दक्षिण एशिया में भारत के लिये समस्या उत्पन्न कर रही है।

चीन के उकसावे में ही नेपाल ने नए नक्शे को अपनाकर भारत के साथ सीमा विवाद को पुनर्जीवित कर दिया है। श्रीलंका, चीन के ऋण जाल में फँसा हुआ है और चीन पर निर्भर हो चुका है। नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019 के बाद भारत के प्रति बांग्लादेश के रूख में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। वर्तमान में अफगानिस्तान एक बड़े संक्रमण के दौर से गुजर रहा है और भारत का बहुदलीय वार्ता से बाहर होना चिंता का विषय है। पाकिस्तान पर रणनीतिक बढ़त हासिल करने के लिये भारत की अफगानिस्तान में मौजूदगी अति आवश्यक है। पश्चिम एशिया में ईरान ने भी भारत द्वारा चाबहार बंदरगाह के विकास में की जा रही देरी पर नाराजगी व्यक्त की है।
इन चुनौतियों के बावजूद भारत ने पिछले कुछ वर्षों में विदेश नीति के क्षेत्र में अपनी स्थिति को मजबूत किया है। वर्तमान में भारत, विश्व के लगभग सभी मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है और अधिकांश बहुपक्षीय संस्थानों में उसकी स्थिति मजबूत हो रही है।

विदेश नीति से तात्पर्य

विदेश नीति एक ढाँचा है जिसके भीतर किसी देश की सरकारए बाहरी दुनिया के साथ अपने संबंधों को अलग. अलग स्वरूपों यानी द्विपक्षीयए क्षेत्रीय और बहुपक्षीय रूप में संचालित करती है।
वहीं कूटनीति किसी देश की विदेश नीति को प्राप्त करने की दृष्टि से विश्व के अन्य देशों के साथ संबंधों को प्रबंधित करने का एक कौशल है।

किसी भी देश की विदेश नीति का विकास घरेलू राजनीतिए अन्य देशों की नीतियों या व्यवहार एवं विशिष्ट भू. राजनीतिक परिदृश्यों से प्रभावित होता है।

शुरुआत के दिनों में यह माना गया कि विदेश नीति पूर्णतः विदेशी कारकों और भू.राजनीतिक परिदृश्यों से प्रभावित होती हैए परंतु बाद में विशेषज्ञों ने यह माना कि विदेश नीति के निर्धारण में घरेलू कारक भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय विदेश नीति का स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स पर प्रभाव

2007 में, भारतीय नौसेना ने 'भारतीय समुद्री सिद्धांत' प्रकाशित किया, जो संभावित भारतीय नौसैनिक रणनीतियों को रेखांकित करने वाला एक दस्तावेज है। यह होर्मुज जलडमरूमध्य से मलक्का जलडमरूमध्य तक एक सक्रिय भारतीय नौसैनिक उपस्थिति की महत्वाकांक्षाओं का वर्णन करता है। इसके अलावा, सिद्धांत विशेष रूप से हिंद महासागर व्यापार के अंतरराष्ट्रीय शिपिंग लेन और नियंत्रण चोक बिंदुओं की पुलिस की आवश्यकता का स्पष्ट उल्लेख करता है। 2007 में, भारत ने उत्तरी मेडागास्कर में अपनी दूसरी विदेशी सैन्य सुनवाई पोस्ट खोली, जिसका उद्देश्य मोजाम्बिक चैनल के माध्यम से शिपिंग गतिविधियों की बेहतर निगरानी करना था। भारत सरकार ने उसी इरादे से, भारतीय निगरानी विमान के लिए एक हवाई पट्टी के निर्माण के संबंध में मॉरिटानिया के साथ वार्ता की मेजबानी की है, साथ ही मालदीव में रडार स्टेशनों के निर्माण का आयोजन किया है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

2011 में, भारत सरकार ने आगे घोषणा की कि वह सित्तवे बन्दरगाह, बर्मा में एक गहरे पानी के बंदरगाह को निधि देगी ये जून 2013 तक कार्यशील होने के लिए, 2014 तक पूरा होने के लिए बंदरगाह को भारत से जोड़ने वाले एक अतिरिक्त राजमार्ग के लिए। सित्तवे बंदरगाह के निर्माण को अक्सर दक्षिणपूर्व में बढ़ते चीनी प्रभाव को संतुलित करने के लिए भारत की ओर से एक ठोस रणनीति के प्रमाण के रूप में उद्धृत किया जाता है।

चीन की तरह, भारत भी अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए विदेशी तेल उत्पादकों पर बहुत अधिक निर्भर है। भारत का लगभग 89% तेल जहाज से आता है, और तेल जलाने से भारत की लगभग 33% ऊर्जा जरूरतें पूरी होती हैं। इसलिए संचार की प्रमुख समुद्री लाइनों की सुरक्षा को एक आर्थिक अनिवार्यता के रूप में मान्यता दी गई है। इस संबंध में, भारत ने ऐतिहासिक रूप से हिंद महासागर में समुद्री डकैती और आतंकवाद विरोधी प्रयासों पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया है। इनमें से सबसे उल्लेखनीय ऑपरेशन आइलैंड वॉच है, जो 2010 में सोमाली समुद्री लुटेरों के खिलाफ भारत के पश्चिमी समुद्री तट पर गश्त करने का प्रयास है।

हिंद महासागर में समुद्री डकैती

इनमें से कई आतंकवाद–रोधी और समुद्री डकैती विरोधी प्रयास अमेरिकी बलों के साथ समन्वय में किए गए हैं, हालांकि भारतीय अधिकारियों ने पारंपरिक रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यासों को सामान्य हितों की पहल तक सीमित रखा है, अक्सर वे संयुक्त राष्ट्र की मंजूरी के तहत होते हैं। फिर भी, दक्षिण एशिया में इस्लामी आतंकवाद के खतरे का मुकाबला करने में अमेरिका के नए हित ने भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका को और अधिक ठोस सैन्य सहयोग की ओर धकेल दिया है। अमेरिकी सैन्य अधिकारियों और रणनीतिकारों के लिए, इस बढ़ते द्विपक्षीय संबंध को व्यापक रूप से चीनी क्षेत्रीय आधिपत्य के खतरों के प्रतिसंतुलन के अवसर के रूप में देखा जाता है। बढ़ती चीनी शक्ति के खिलाफ द्विपक्षीय सहयोग के प्रयासों को लोकप्रिय आशंकाओं से बल मिला है कि हिंद महासागर में चीन की विस्तारित उपस्थिति से भारत की आर्थिक और सैन्य सुरक्षा को खतरा है। हेरिटेज फाउंडेशन के एक उल्लेखनीय चीन विशेषज्ञ डीन चेंग ने दृढ़ता से आग्रह किया है कि हिंद महासागर में चीन के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के साथ साझेदारी करना जारी रखे।

उपसंहार

दक्षिण चीन सागर, हिंद महासागर और आसियान देशों के साथ चीनी बढ़ते प्रभाव और इसके विवादास्पद क्षेत्रीय, राजनयिक या वाणिज्यिक मुद्दों का मुकाबला करने के लिए 'नेकलेस ऑफ डायमंड्स' के रूप में जानी जाने वाली रणनीति । यह रणनीति विशेष रूप से मोतियों की डोरी और न्यू सिल्क रूट का मुकाबला करने के लिए है। भारत संयुक्त सेना, वायु सेना और नौसेना अभ्यास करने के लिए वियतनाम, ओमान, इंडोनेशिया, जापान, मंगोलिया, सिंगापुर, सेशेल्स और सभी पांच मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ संबंधों को मजबूत करता है। हीरे के हार में नौसेना के ठिकानों का विकास, हवाई गलियारा, बहुपक्षीय व्यापार का घमंड शामिल है। मोतियों की स्ट्रिंग को कुछ भारतीय टिप्पणीकारों द्वारा चीन की सलामी स्लाइसिंग रणनीति की अभिव्यक्ति के रूप में माना जाता है ।

सन्दर्भ सूची

'मुद्दों और अंतर्दृष्टि| प्रशांत फोरम' । । मूल से 22 दिसंबर 2018 को संग्रहीत किया गया । 22 दिसंबर 2018 को लिया गया ।

'यहां वह सब है जो आपको 'मोतियों की माला' के बारे में जानना चाहिए, चीन की भारत को घेरने की नीति' ।

'ए बी लिंटनर, बर्टिल (15 अप्रैल 2019)। सबसे महंगा मोतीः भारत के महासागर के लिए चीन का संघर्ष । ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। आईएसबीएन 978–1–78738–239–8.

'दत्ता, प्रभाष के. (15 जून 2017)। 'क्या चीन वास्तव में भारत को अपने मोतियों की माला से घेर सकता है? एशिया का महान खेल' । इंडिया टुडे । मूल से 23 जनवरी 2019 को संग्रहीत ।

'टाइम्स, यूरेशियन (31 मार्च 2018)। ष्चीन की ष्स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्सष के परिणामस्वरूप हिंद महासागर में भारत का पहला नुकसान हुआष । यूरेशियन टाइम्सः नवीनतम एशियाई, मध्य–पूर्व, यूरेशियन, भारतीय समाचार ।

खुराना, गुरप्रीत एस हिंद महासागर और इसकी सुरक्षा के प्रभाव में चीन के श्मोती की स्ट्रिंग संग्रहीत 1 अप्रैल 2019 पर वेबैक मशीन रणनीतिक विश्लेषण 32 (1) फरवरी 2008, 1–39।

आई श्रीवास्तव, संस्कार (1 जून 2013)। 'इंडियन स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' अनस्ट्रिंगिंग 'चाइनीज स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स थ्योरी' । द वर्ल्ड रिपोर्टर । मूल से 19 दिसंबर 2017 को संग्रहीत किया गया । 4 जून 2013 को लिया गया ।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

'चीन सामरिक समुद्री रास्तों बनाता है' संग्रहीत 30 अक्टूबर 2019 पर वेबैक मशीन , वाशिंगटन टाइम्स , वाशिंगटन, 17 जनवरी 2005 को लिया पर 4 मई 2013।

सी राजा मोहन (28 नवंबर 2012)। भारत–प्रशांत में चीन–भारतीय प्रतिद्वंद्विता । किंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस, 2012. ISBN 978–0870033063.

पेहरसन, क्रिस्टोफर जे. स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स: मीटिंग द चौलेंज ऑफ चाइनाज राइजिंग पावर अक्रॉस द एशियन लिटोरल। संग्रहीत फरवरी 2013 20 पर वेबैक मशीन , 'सुरक्षा रणनीति में कर्लाए पत्रों', जुलाई 2006 4 मई 2013 को प्राप्त किया गया।

चीन चाहेंगे कभी आधिपत्य ने शोध संग्रहीत 4 मार्च वर्ष 2016 वेबैक मशीन , 'सिन्हुआ समाचार एजेंसी' बीजिंग, 23 अप्रैल 2009 4 मई 2013 को प्राप्त किया गया।

बकले, क्रिसय मायर्स, स्टीवन ली (18 दिसंबर 2018)। 'कम्युनिस्ट पार्टी के नियंत्रण का बचाव करने वाले शी जिनपिंग के भाषण के 4 अंश' । द न्यूयॉर्क टाइम्स । आईएसएसएन 0362–4331 ।

'चीन के विदेशों में बंदरगाहों का बढ़ता साम्राज्य मुख्य रूप से व्यापार के बारे में है, आक्रमण नहीं' । अर्थशास्त्री । 8 जून 2013। 21 मई 2017 को मूल से संग्रहीत ।

'डेविड बस्टर। 'बियॉन्ड द स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्सः क्या हिंद महासागर में वास्तव में एक सुरक्षा दुविधा है?' . 11 अगस्त 2014 को लिया गया ।

'डेविड एच. शिन। सैन्य और सुरक्षा संबंधः चीन, अफ्रीका और शेष विश्व।' में रॉबर्ट आई। रोटबर्ग। 'अफ्रीका में चीनः सहायता, व्यापार और प्रभाव'।

Paal, Douglas H. "'Beware the South China Sea." Archived 10 May 2013 at the Wayback Machine, "The Diplomat", 15 July 2011. Retrieved on 4 May 2013.

Sulong, Rini Suryati. 2012. "'The Kra Canal and Southeast Asian Relations." Archived 25 July 2018 at the Wayback Machine, "Journal of Current Southeast Asian Affairs", Hamburg, 31 (4): 110-125.

Joseph, Josy. "Delhi entangled in the Dragon's String of Pearls" Archived 10 October 2013 at the Wayback Machine, DNA, New Delhi, 11 May 2009. Retrieved on 4 May 2013.

Samaranayake, Nilanthi. 2011. "Are Sri Lanka's Relations with China Deepening? An Analysis of Economic, Military, and Diplomatic Data" Archived 4 April 2019 at the Wayback Machine, Asian Security 7 (2): 119-146.

Eshel, David. "'String of Pearls' is Securing China's Sea Lanes". Archived 4 May 2017 at the Wayback Machine Defense Update, 20 December 2010.

Raza, Syed Irfan."China given contract to operate Gwadar port." Archived 4 June 2013 at the Wayback Machine, "Dawn", 19 February 2013. Retrieved on 4 May 2013

"Rapid Fire April 1, 2013: China Not Investing in Ports Abroad for Mil Purposes" Archived 8 January 2018 at the Wayback Machine, Defense Industry Daily, 1 April 2013. Retrieved on 4 May 2013.

Singh, Teshu (15 October 2013). "China and ASEAN: Revisiting the Maritime Silk Road". www.ipcs.org. The Institute of Peace and Conflict Studies. Archived from the original on 6 July 2017. Retrieved 16 October 2013.

"India, US need to partner to balance China in Indian Ocean" Archived 1 June 2013 at the Wayback Machine, The Economic Times, Washington, 2 September 2010. Retrieved on 4 May 2013.

"What is Necklace of Diamonds Strategy?". Jagranjosh.com. 21 July 2020. Retrieved 29 October 2020.

Vidhi Bubna and Sanjna Mishra (14 July 2020). String of Pearls vs Necklace of Diamonds, Asia Times.

Singh, Abhijit (27 July 2018). "China's strategic ambitions seen in the Hambantota port in Sri Lanka". ORF. Retrieved 17 December 2020. If the PLAN's salami-slicing approach in the South China Sea is any indication, China's gameplan in Hambantota is likely to be one of incremental control. [...] Many in India's strategic community then seem convinced Hambantota will be a crown jewel in China's "string of pearls" strategy.